



Original Article

दूधनाथ सिंह के उपन्यासों में चित्रित शैक्षिक समस्याएं

प्रा. देशमुख किरण अमृतराव

सहायक अध्यापक

प्रा.डॉ.एन.डी.पाटील महाविद्यालय, मलकापुर

Manuscript ID:

IJAAR-C130340

ISSN: 2347-7075

Impact Factor – 8.141

Volume - 13

Issue - 3

January – February 2026

Pp. 199 - 203

Submitted: 28 Jan. 2026

Revised: 06 Feb. 2026

Accepted: 10 Feb. 2026

Published: 28 Feb. 2026

Corresponding Author:

प्रा. देशमुख किरण अमृतराव

Quick Response Code:



Website: <https://ijaar.co.in/>



DOI: 10.5281/zenodo.22786016

DOI Link:

<https://doi.org/10.5281/zenodo.22786016>



Creative Commons



प्रस्तावना:

सही मायने में अगर देखा जाए तो साहित्य समाज का दर्पण होता है। समाज में जो समस्याएँ, संघर्ष, असमानताएँ और परिवर्तन होते हैं, उनका प्रतिबिम्ब साहित्य में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। विभिन्न कालखंडों और विधाओं में साहित्यकारों ने सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक समस्याओं को संवेदनशीलता के साथ चित्रित किया है। हिंदी साहित्य के उपन्यासों में समाज का यथार्थ चित्रण प्रमुख विशेषता है। विभिन्न कालखंडों में उपन्यासकारों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से प्रभावी ढंग विविध समस्याओं को प्रस्तुत किया है। जैसे की जाति-व्यवस्था, छुआछूत, दहेज, अनमेल विवाह, स्त्री-शोषण, गरीबी, किसान-शोषण बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, सत्ता संघर्ष, सांप्रदायिकता, विभाजन, नारी-समस्या, मनोवैज्ञानिक समस्याएँ, आदिवासी और दलित समस्याएं आदि। अतः कहना गलत नहीं होगा कि साहित्य समाज के परिवर्तन के साथ और जागरूकता तथा सजगता का सशक्त माध्यम सिद्ध होता है। उपन्यासों में चित्रित शिक्षा-व्यवस्था से संबंधित समस्याएँ साहित्य का एक महत्वपूर्ण विषय रही हैं। हिंदी उपन्यासकारों ने शिक्षा-प्रणाली की वास्तविकताओं उसकी विसंगतियों, भ्रष्टाचार, वर्गभेद, नैतिक पतन और बेरोजगारी को गहराई से प्रस्तुत किया है। लेखक दूधनाथ सिंह बिल्कुल इसी परिपाटी पर चलने वाले उपन्यासकार रहे हैं।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)

This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International License (CC BY-NC-SA 4.0), which permits others to remix, adapt, and build upon the work non-commercially, provided that appropriate credit is given and that any new creations are licensed under identical terms.

How to cite this article:

प्रा. देशमुख किरण अमृतराव. (2026). दूधनाथ सिंह के उपन्यासों में चित्रित शैक्षिक समस्याएं. *International Journal of Advance and Applied Research*, 13(3), 199 - 203. <https://doi.org/10.5281/zenodo.22786016>

आखिरी कलाम और निष्कासन में चित्रित शैक्षिक समस्याएं:

आधुनिक हिंदी साहित्य में दूधनाथ सिंह एक सशक्त कथाकार के रूप में प्रतिष्ठित हैं। उनके उपन्यासों में समकालीन समाज की जटिलताओं, राजनीतिक-सांस्कृतिक विडंबनाओं

तथा बौद्धिक जीवन की त्रासदियों का सजीव चित्रण मिलता है। विशेष रूप से 'निष्कासन' और 'आखिरी कलाम' में शिक्षा-जगत से जुड़ी समस्याओं को केंद्र में रखा गया है। इन कृतियों में विश्वविद्यालयी जीवन, शिक्षक-छात्र संबंध, प्रशासनिक तंत्र, वैचारिक स्वतंत्रता और शिक्षा के बदलते चरित्र का यथार्थपरक



एवं आलोचनात्मक चित्रण मिलता है। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था के संदर्भ जैनेन्द्रजी लिखते हैं- "वर्तमान शिक्षा प्रणाली अनुशासन की जड़ों को मजबूत करने वाली नहीं है"। इस प्रकार शिक्षा व्यवस्था किस प्रकार मनुष्य को खोकली बनाती जा रही है। आज की शिक्षा व्यवस्था में आई गिरावट तथा समस्याओंको दूधनाथ सिंह जी ने अपनी रचनाओं में चित्रित करने का प्रयास किया है।

1. छात्र जीवन से संबंधित समस्याएं:

- **प्रतिकूल परिस्थिति:** सभी छात्रों की स्थिति उच्च शिक्षा लेने लायक नहीं होती। कोई छात्र अपनी आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण अपने आगे की पढ़ाई रोक देते हैं। कुछ छात्र ऐसे भी होते हैं जो पढ़ाई में जहीन तथा जिद्दी होते हैं। वह किसी भी हालात में पढ़ना चाहते हैं चाहे कितनी भी मुश्किल क्यों ना आए। 'निष्कासन' उपन्यास में कुछ छात्र प्रतिकूल स्थिति से गुजरते दिखाई देते हैं। उपन्यास की नायिका 'लड़की' तथा उसकी बड़ी बहन है इस बात को और अधिक स्पष्ट करते लेखक लिखते हैं - "लड़की के पास इतनी महंगी साड़ियां या वैभव के गमकते प्रसाधन नहीं है दो-चार घिसी हुई सूती साड़ियां है। बची सिर्फ एक है। बाकी उसकी बड़ी बहन की उतारण है"।² स्पष्ट है कि कुछ छात्रों की परिस्थिति प्रतिकूल है।
- **फैशन तथा सौंदर्य प्रसाधन की तरफ आकर्षण:** आज हम देखते हैं हमारा समाज फैशन तथा सौंदर्य प्रसाधन की तरफ बड़ी मात्रा में आकृष्ट है। युवा वर्ग इससे कैसे परे रह सकता है। 'निष्कासन' उपन्यास में कुछ छात्र फैशन की तरफ तथा तथा सौंदर्य प्रसाधनों की तरफ आकर्षित होते दिखाई देते हैं। इस स्थिति का वर्णन करते हुए लेखक लिखते हैं - "एक कमरे में दो लड़कियां फेस पैक लगाए भूतनी बन बैठी है। सिर्फ उनकी आंखें खुली है। इनमें से एक दूसरी

की खुली टांगों को किसी लोशन से साफ कर रही थी।"³ उपन्यास में चित्रित छात्र वर्ग बढ़ती फैशन तथा सौंदर्य प्रसाधन के तरफ आकर्षित है।

- **छात्रों में व्यसनाधीनता:** व्यसन एक फैशन बन गया है छात्र जीवन में यह बात नुकसानदेय रहती है। इसके चंगुल से युवकों को परे रहना ही बेहतर है। निष्कासन उपन्यास में कुछ छात्र व्यसनाधीन है। इस उपन्यास में मैत्री मिश्रा नामक एक पात्र है जो छात्रावास की छात्र नेता है और व्यसन की शिकार है, वह शराब पीने वाली है। जब छात्रावास की अधीक्षक से उसका झगड़ा हो जाता है तो अधीक्षक उसे मनाती है इस बात को स्पष्ट करते हैं - "उसकी खातिरदारी दारू कलेजी से हुई"⁴। उपरोक्त कथन से स्पष्ट है कुछ छात्र व्यसनाधीन है।
- **जातीयता मानने वाले छात्र:** जातीयता का मूल धीरे-धीरे नष्ट होता जा रहा है। फिर भी जातीय का समूलनाश अभी तक नहीं हुआ है अभी भी कुछ स्थानों पर जातीयता प्रत्यक्ष नहीं तो परोक्ष रूप में नजर आती है। 'निष्कासन' उपन्यास में जातीयता को माननेवाले कुछ छात्र नजर आते हैं। प्रस्तुत उपन्यास की नायिका लड़की दलित जाति से है। लड़की छात्रावास में रहती है उसमें कुछ लड़कियां जातीयता मानने वाली है। इस बारे में लेखक लिखते हैं - "वे सभी महिमा मंडित सवर्ण घरों से आती है और गप के दौरान अक्सर हमारा खानदान, हमारा खानदान बोलती है।"⁵ इस कथन से स्पष्ट होता है कि आज जाति प्रत्यक्ष नहीं तो परोक्ष रूप में अवश्य मानी जाती है।
- **गुंडागर्दी तथा छेड़छाड़:** युवा पीढ़ी गुंडागर्दी की तरफ आकृष्ट होती दिखाई देती है। इस गुंडागर्दी के कारण जेल की हवा भी खानी पड़ती है। 'निष्कासन' उपन्यास गुंडागर्दी तथा लड़कियों को छेड़ने वाले छात्र दिखाई देते हैं। प्रस्तुत



उपन्यास की नायिका 'लड़की' छात्रावास से अपने विभाग की ओर जा रही है तो कुछ गुंडे छात्र उसे छेड़ने का प्रयास करते हैं वह कहते हैं- "मार्किन ब्रांड है यार .. 'ओल्ड इस गोल्ड' वे साथ साथ ही उसके पीछे-पीछे चलने लगते हैं।"⁶ इससे पता चलता है कि कुछ गुंडागर्दी करने वाले छात्र लड़कियों को छेड़कर किस प्रकार मजा लेते हैं।

2. अध्यापकों से संबंधित समस्या:

- **व्यसनी अध्यापक:** अध्यापक में व्यसनाधीनता बुरी चीज है। अध्यापक अपने देश का भविष्य है। अध्यापक अगर व्यसनी हो तो क्या देश का विकास होना संभव है। लेखक दूधनाथ सिंह अपने उपन्यास में व्यसनी अध्यापकों का चित्रण करते हैं। 'निष्कासन' उपन्यास में उपन्यास में व्यसनी अध्यापक का चित्रण किया है। प्रस्तुत उपन्यास में छात्रावास के अधीक्षक डॉक्टर माहिष्मती सिंह को शराब पीने की बुरी आदत है। इस कथन द्वारा यह बात अधिक स्पष्ट होती है - "वैसे मैं को किसीम- किसम के स्वाद बहुत पसंद है। काफी दिनों तक विदेशी ब्रांडों की फैन रही अब जनता जनार्दन का कहना था कि वह देसी स्वाद पर लौटने वाली नहीं।"⁷ उक्त कथन से स्पष्ट है कि उपन्यास में कुछ अध्यापक व्यसनी है।
- **जातीयता मानने वाले अध्यापक:** बारीकी से देखा जाए तो आज कई स्थानों पर आम लोग ही नहीं तो पढ़े-लिखे लोग भी जातीयता मानते हुए दृष्टिगोचर होते हैं। अध्यापक तो समाज का महत्वपूर्ण घटक होता है। लेखक दूधनाथ जी अपने उपन्यास में जातीयता मानने वाले अध्यापकों का चित्रण करते हैं। निष्कासन उपन्यास में जातीयता मानने वाले अध्यापक दिखाई देते हैं- "एक अध्यापक पढ़ते वक्त जातीयता का जिक्र करता है तो एक लड़का आप भी तो ब्राह्मण है लड़की ने कहा लेकिन मैं दी क्लास हूं सर ने

अपने छाती पर उंगली से ठोकते हुए कहा"⁸ आखिरी कलाम उपन्यास में भी एक प्राध्यापक जातीयता का जिक्र करते हुए कहते हैं - "यह ब्राह्मण है" स्पष्ट है कि विवेच्य उपन्यासों में चित्रित को कुछ अध्यापक जातीयता मानने वाले हैं।

- **चापलूसी करने वाले अध्यापक:** कुछ अध्यापक इतनी लाचार और चापलूस होते हैं जो अपना स्वार्थ साधने के लिए न्याय है तो स्वास्थ्य के लिए कुछ भी करने के लिए विवश होते हैं। 'निष्कासन' उपन्यास में लाचार तथा चापलूसी करने वाले अध्यापक दिखाई देते हैं। इस संबंध में लेखक लिखते हैं - "अट्टहास जो के बारे में क्या कहा जा तथा की आज से 20 साल पहले उनकी तदर्थ नियुक्ति हुई थी तो यूनिवर्सिटी में हर किसी बात पर भी दांत दिखाते थे जिससे हर कोई खुश रहे और उनकी तदर्थ नियुक्ती सनातन नियुक्ति में बदल जाए"¹⁰ उपन्यास में लाचार तथा चापलूसी करने वाले अध्यापक दिखाई देते हैं।
- **राजनेताओं से संबंध रखने वाले अध्यापक:** आज हम देखते हैं कि बहुत सारे अध्यापक राजनेताओं से अपना निजी संबंध बनाए हुए हैं। क्योंकि शिक्षा क्षेत्र पर आज राजनीतिक ज्यादा तौर पर हावी है। निष्कासन उपन्यास में राजनेताओं से संबंध रखने वाले अध्यापक का चित्रण है। इस बात को स्पष्ट करते हुए लेखक लिखते हैं- "लड़की ने उनमें से कुछ लोगों को पहचाना उनमें कई यूनिवर्सिटी के प्राध्यापक थे यूनिवर्सिटी में जिसके कैमरे में घुसते डर लगता था वह यहां लाइन लगे खड़े थे"¹¹ उपन्यास में राजनेताओं से संबंध रखने वाले अध्यापक का चित्रण है।
- **अध्यापकों में आपसी मनमुटाव:** समाज में अध्यापक एक ऐसा आदर्श व्यक्तिमत होता है जिनका आदर्श समाज लेता है। ऐसे अध्यापकों में ही आपसी मनमुटाव हो तो



बात बिल्कुल भी गौर करने लायक है। 'आखिरी कलाम' उपन्यास में अध्यापकों के आपसी मनमुटाव का चित्रण है। प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने एक विश्वविद्यालय में प्रोफेसर पद की नियुक्ति साक्षात्कार का चित्रण किया है। उपन्यास का नायक पांडेय जी प्रोफेसर पद की साक्षात्कार के लिए गया है मगर उसके अध्यक्ष से पांडे के बारे में मनमुटाव है इसलिए वह कहता है-"जासूस-जासूस, दलाल पैसे खाने वाला। इतना बड़ा बंगला, नौकर चाकर, गाड़ी, घोड़ा क्या ठाठ से रहते हैं सहाब.. आखिर कहां से आता है।"¹² उपन्यास में अध्यापकों के आपसी मनमुटाव का चित्रण है।

3. प्रशासन से संबंधित समस्याएं:

- **महामहिम राज्यपाल:** महामहिम राज्यपाल राज्य के प्रमुख प्रशासन अधिकारी होते हैं। उन्हें हम कुलाधिपति भी कहते हैं। कुलाधिपति विश्वविद्यालय के कामकाजों में दखलंदाजी नहीं करते किंतु कुछ खास वजह हो तो वे दखलअंदाजी देते हैं। 'निष्कासन' उपन्यास में राज्यपाल जी का चित्रण है प्रस्तुत उपन्यास में नायिका 'लड़की' दलित वर्ग की है जिसका उत्पीड़न हुआ है। महामहिम राज्यपाल दलित उत्पीड़न का मुद्दा बनाते हैं। तब कुछ लोग इस उत्पीड़न के मामले को राजनीतिक रूप देते हैं। तब कुलपति कहते हैं-"यह कम्युनिस्टों की साजिश है"¹³ इससे स्पष्ट है कि उपन्यास में चित्रित महामहिम राज्यपाल अपने पक्ष के प्रति कठोर राजनीतिक कार्यकर्ता है।
- **कुलपति:** विश्वविद्यालय और कुलपति महोदय का गहरा संबंध होता है। विश्वविद्यालय के प्रमुख प्रशासन अधिकारी के रूप में कुलपति की नियुक्ति की जाती है। निष्कासन उपन्यास में कुलपति महोदय का चित्रण हुआ है। प्रस्तुत उपन्यास में लड़की के दलित उत्पादन का मसला उठता है तब कुलपति बड़ी चालाकी से इस मामले को निपटा लेते

हैं। कुलपति बताते हैं कि -"जांच कमेटी की रिपोर्ट है लड़की अपनी कोई भी उत्पीड़न साबित नहीं कर सकी कम्युनिस्टों के उकसावे पर यह सब हुआ और हो रहा है। वे इसे आंदोलन का रूप देना चाहते हैं।"¹⁴ 'आखिरी कलाम' उपन्यास में भी कुलपति महोदय का चित्रण दिखाई देता है। इस विश्वविद्यालय के कुलपति अंधश्रद्धा मानने वाले नजर आते हैं। इस बात को लेखक इस कथन से स्पष्ट करते हैं कि- "कुलपति जी लगता है अब नहीं आएंगे .. दूसरा बोला बिल्ली ने रास्ता काट लिया होगा तब बिल्ली उल्टा लोग लौटे तो पधारेंगे और बिल्ली उल्टा लौटेंगे ही क्यों"¹⁵ स्पष्ट है निष्कासन तथा आखिरी कलम उपन्यास में चित्रित कुलपति महोदय चालक, राजनीतिज्ञ तथा अंधश्रद्धालु है।

- **पुलिस:** आज समाज का एक भी अंग ऐसा नहीं है जिसमें पुलिस प्रशासन का संबंध ना हो। फिर उससे हमारी शिक्षा क्षेत्र कैसे अछूता रह सकता है। निष्कासन उपन्यास पुलिस प्रशासन का चित्रण दिखाई देता है। पुलिस समाज का रक्षक होता है मगर यह रक्षक ही भक्षक की भांति व्यवहार करने लगता है। उपन्यास की नायिका लड़की का उत्पीड़न हुआ है इसलिए लड़की पुलिस सिपाही से पूछते हैं कि किसी के साथ अगर दुर्व्यवहार हुआ तो उसके लिए पुलिस थाने में क्या करना चाहिए। तो पुलिस सिपाही कहता है - "तो पहले दुर्व्यवहार हो जाने दो"¹⁶ अतः कहना गलत नहीं होगा कि आज पुलिस प्रशासन आप लोगों का नहीं रहा है।
- **मुख्यमंत्री:** मुख्यमंत्री जी के हाथों पूरे राज्य का प्रशासन होता है। वह शिक्षा क्षेत्र से संबंधित सबसे ऊंचा तथा जिम्मेदार व्यक्ति होता है। उपन्यासकार ने निष्कासन उपन्यास में मुख्यमंत्री जी का चित्रण हुआ है। उसके बारे में अखबारों के प्रतिनिधि मुख्यमंत्री जी के पास साक्षात्कार के



लिए आते हैं , मुख्यमंत्री जी सवर्ण वर्ग के है वे कहते हैं -

"कोई दलित उत्पीडन नहीं हुआ है " ¹⁷ स्पष्ट है कि मुख्यमंत्री किस प्रकार लापरवाही से जवाब देकर बात को टालने का प्रयास करते हैं।

निष्कर्ष:

‘निष्कासन’ और ‘आखिरी कलाम’ में दूधनाथ सिंह ने शिक्षा-जगत की विडंबनाओं को गहराई से उकेरा है। इन कृतियों में शिक्षा का राजनीतिकरण, सांप्रदायिकता का प्रभाव, प्रशासनिक भ्रष्टाचार, बौद्धिक स्वतंत्रता पर संकट, व्यावसायीकरण, छात्र असंतोष जैसी समस्याओं का सशक्त चित्रण मिलता है। लेखक का उद्देश्य केवल आलोचना करना नहीं, बल्कि शिक्षा की मूल आत्मा—स्वतंत्रता, नैतिकता और मानवीयता—को पुनर्स्थापित करने की आवश्यकता पर बल देना है। कहना गलत नहीं होगा कि शिक्षा जगत को अंधेरे में रखने के लिए हमारा समाज अधिक मात्रा में जिम्मेदार है साथ ही जो अधिकारी वर्ग है वह अपने अधिकारों का दुरुपयोग कर शिक्षा क्षेत्र को गंदा कर रहा है इन्हें सही रास्ते पर लाने के लिए अध्यापक छात्र कर्मचारी तथा हमारे पूरे समाज को संगठित होना आवश्यक है अन्यथा शिक्षा व्यवस्था का पतन निश्चित है

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. शिक्षा और संस्कृति, पृष्ठ- 28
2. दूधनाथ सिंह -निष्कासन, पृ-12
3. दूधनाथ सिंह- निष्कासन, पृ .19
4. दूधनाथ सिंह-निष्कासन ,पृ-20
5. दूधनाथ सिंह-निष्कासन ,पृष्ठ 14
6. दूधनाथ सिंह-आखिरी कलाम पृष्ठ 87
7. निष्कासन- पृ-30
8. निष्कासन- पृष्ठ 27
9. निष्कासन -पृष्ठ 60
10. निष्कासन -पृष्ठ 103
11. निष्कासन- पृ -124
12. आखिरी कलाम -पृ, 36
13. निष्कासन- पृ, 130
14. निष्कासन -पृ, 130
15. निष्कासन- पृ, 60
16. निष्कासन- पृ, 62
17. निष्कासन- पृ, 65